अभ्यास 1 स्वस्थ और रोगी पक्षियों की पहचान करना

संरचना

1.1 प्रस्तावना

उद्देश्य

1.2 परीक्षण

1.2.1 सिद्धान्त

1.2.2 सामग्री आवश्यकताएं

1.2.3 कार्यविधि

1.2.4 प्रेक्षण

1.2.5 परिणाम

1.3 सावधानियां

1.1 प्रस्तावना

कुक्कुट पालन में, पक्षियों का स्वास्थ्य उद्यम की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। यदि एक या कुछ पक्षी रोगी हों और उनकी आरंभिक अवस्था में पहचान न की जाए तो पक्षियों के झुंड में रोग के फैलने का खतरा रहता है, यदि वह रोग सूक्ष्मजीवों (संक्रामक रोगों की स्थिति में/जीवाणु/विषाणु/परजीवियों/प्रोटोजोआ) के द्वारा हो। इसलिए, कुक्कुट पालक के लिए यह अनिवार्य है कि वह रोगी पक्षियों को स्वस्थ से विभेदित कर सके। इस कौशल का विकास रोग की जल्दी पहचान करने में सहायक होगा, जिससे उचित रोकथाम और नियंत्रण के उपाय किए जा सके, जिससे आर्थिक हानि को कम किया जा सके।

उद्देश्य

इस परीक्षण को करने के बाद, आप :

- बीमारी के लक्षणों की पहचान कर पाएंगे; और
- सही समय पर रोग के खतरे का मूल्यांकन कर पाएंगे; जिससे विभिन्न रोगों की रोकथाम और नियंत्रण किया जा सके।

1.2 परीक्षण

1.2.1 सिद्धान्त

शब्द 'रोग' का अर्थ 'सुविधाजनक स्थिति में न होना' है और स्वाभाविक रुप से एक बीमार (रोगी) पक्षी की शारीरिक स्थिति में कुछ परिवर्तन दिखाई देते हैं जिनकी पहचान झुंड में पक्षियों का विशेषरुप से प्रभावित पक्षियों का निरीक्षण करके की जा सकती है।

1.2.2 सामग्री आवश्यकताएं

- पक्षियों का एक झुंड जिससे स्वस्थ और रोगी पक्षी हों।

1.2.3 कार्यविधि

पक्षियों का निरीक्षण करने की प्रक्रिया के कुछ कोड और प्रक्रिया हैं। कोड्स का सामान्यतः निरीक्षण करने वाले व्यक्ति को उसके द्वारा झुंड का परीक्षण आरंभ करने से पहले पढ़ लेना चाहिए। उचित कोड्स के होने पर रोगी पक्षी की पहचान में पक्षियों के झुंड का सामान्य निरीक्षण और रोग की संभावना वाले पक्षियों का व्यक्तिगत हस्ताचरण सम्मिलित है। सामान्यतः कुक्कुट/पक्षियों के झुंड का दिन में कम से कम दो बार निरीक्षण किया जाता है, एकबार सुबह और पुनः शाम को। प्रत्येक बार झुंड का निरीक्षण करते समय, निम्नलिखित का सख्ती से पालन करना चाहिए।

(i) कोड्स

1) इसी कार्य के लिए बने परिधान–स्वच्छ और रोगाणुनाशित–पहनने चाहिए; रोगाणुनाशी का स्प्रे होना अच्छा रहता है।

2) भवन में प्रवेश करने से पहले चप्पलों या जूतों को फुटबाथ (द्वार के सामने एक जल से भरा उथला पात्र जिसमें डिटॉल/फिनायल/सेवलोन मिला हो) में डुबोकर रोगाणुनाशित करें।

3) दस्ताने; मास्क और टोपी पहले।

4) आगे परीक्षण के लिए किसी सामग्री को एकत्रित करने के लिए अपने साथ निर्जमित शीशियां, वियोजनीय सिरिंज, कैंचिग हुक, स्पेसीमेन बोतल, पोलीथीन की थैलियां, स्लाइड आदि ले जाएं।

5) पक्षियों के प्रकार, आयु और संख्या को उनके पालन के तरीके के साथ नोट कीजिए।

(ii) सामान्य प्रेक्षण

1) जैसे ही आप कुक्कुट फार्म में प्रवेश करते हैं, आपको अंदर के तापमान के कारण आंखों में जलन या बहुत असुविधाजनक नहीं महसूस करनी चाहिए–विशेषरूप से बहुत पसीना नहीं आना चाहिए।

2) झुंड को छेड़ें नहीं। उन पक्षियों को देखिए जो कोने में घुसे हों, सुस्त दिख रहे हों, खड़े-खड़े सो रहे हों और असामान्य मुद्राएं दिखा रहे हों।

3) हल्के से ताली या सीटी बजाइए। स्वस्थ झुंड में, सभी पक्षी ध्वनि सुनकर सचेत हो जाते हैं। यदि यह खाने का समय हो तो वो फीडर्स की ओर आकर्षित हो जाते हैं और खाने की उम्मीद में एक विशेष ध्वनि निकालते हैं। इसलिए खाने का समय परिवर्तनों को देखने के लिए सबसे उपयुक्त होता है।

4) उनकी बीट (मल) के रंग को देखिए। बीट का असामान्य रंग जैसे काला, सफेद, हरा, लाल, पीलापन लिए सफेद आदि विभिन्न रोगी स्थितियों को दर्शाता है।

5) बीट की संगतता को देखिए। बीट की श्लथ या शुष्क संगतता अस्वस्थ या रोगी स्थिति को दर्शाती है।

6) पक्षियों की भंगिमा को देखिए। असामान्य भंगिमाएं जैसे पीछे की ओर गति, चलने में कठिनाई, एक पैर आगे और दूसरा पीछे बढ़ाना, लकवा, घुटने की संधि पर बैठना,

गर्दन का घूम जाना आदि रोग की स्थिति को दर्शाते हैं। यदि कोई भी पक्षी चल नहीं पा रहा है और आपके हिसाब से पक्षी को अन्य पक्षियों के साथ झुंड ने रखना उचित नहीं है तो उसे निकाल दें।

7) पक्षी द्वारा किसी असामान्य ध्वनि को सुने। असामान्य ध्वनियां जैसे घुरघुराहट (टूटी हुई, अनियमित, रूक कर निकलती आवाज) अथवा चहचहाहट (छोटी, ऊंचे पिच की आवाज जैसे किसी छोटे पक्षी या कीट निकालते हैं) अस्वस्थ अवस्था को दर्शाती है।

8) असामान्य व्यवहार जैसे स्वजातिभक्षण, चोंच मारना, झगड़ा आदि को देखिए।

9) यदि कोई मृत–पक्षी दिखे तो उसे एक पोलीथीन की थैली में (पोस्टमॉर्टम) मरणोत्तर परीक्षण के लिए रख दें।

10) खाने और पीने के स्थान को देखिए, विशेष रूप से जल के स्थान को जिससे बिछावन (लिटर) पर उसके गिरने और गीला होने से बचा जा सके। खाने, पीने और फर्श के लिए आवंटित स्थान का भी मूल्यांकन कीजिए।

11) किसी अन्य प्रेक्षण को रिकॉर्ड कीजिए जिसे आप असामान्य समझते हैं। उदाहरण के लिए, जल के पात्रों का सूखा होना, बिछावन (लिटर) पर अंडे, अंडों के कवच आदि का पाया जाना।

(iii) व्यक्तिगत परीक्षण

1) रोगी पक्षी को पंखों को धीरे से पकड़कर (हाथ से) पकड़ें; रोगी पक्षी उतनी तेजी से नहीं भागते हैं जितने स्वस्थ भागते हैं, यदि आवश्यकता हो तो पकड़ने के लिए हुक का उपयोग कीजिए। यद्यपि, भारी पक्षी जैसे ब्रीडर्स को उनके पंखों से पकड़ना बेहतर होता है।

2) पक्षियों के दोनों पंखों को आधार से पकड़कर उनकी गति को रोके और शरीर के विभिन्न भागों का असमान्यता के लिए निरीक्षण करें। नोट कीजिए कि सभी रोगी पक्षियों में सारणी 1.1 में बताए गए सभी परिवर्तनों का दिखना आवश्यक नहीं है। एक भी लक्षण की उपस्थिति उसे 'रोगी' के रुप में वर्गीकृत करने के लिए पर्याप्त होती है। स्वस्थ और रोगी पक्षियों के बीच अन्तरों को नीचे दिया गया है :

सारणी 1.1 : स्वस्थ और रोगी पक्षियों के शरीर के भागों की स्थिति

क्र.सं.	शरीर का भाग	सामान्य पक्षी	रोगी पक्षी
1	सिर	मजबूत, सिरे पर चपटा, चौड़ा	निर्बल, लंबा, संकरा और फूला हुआ
2.	आंखें	चमकदार, प्रभावी और बड़ी	संकुचित (आमाप में कम) छोटी, जलीय स्त्राव, चिपचिपी और रक्ताभ
3.	कॉम्ब और वाटल	पूर्णतः विस्तारित, लाल, गर्म और चमकदार	संकुचित, शुष्क, नीले से फूले हुए, वृद्धि (नोड्यूल्स/गांठे) युक्त।
4.	चोंच	मजबूत, पीली, एकसमान आकार की	असामान्य चोंच जैसे ऊपर/नीचे की चोंच मुड़ी हुई।
5.	नाक	शुष्क, कोई वृद्धि (नोड्यूल्स) नहीं	नाक के आसपास स्त्राव और/अथवा वृद्धि (नोड्यूल्स)

6.	मुख	सामान्य, मुख के अंदर अथवा किनारों पर कोई वृद्धि नहीं।	स्त्राव, खुले मुख से सांस लेना ओर मुख में वृद्धि (नोड्यूल्स)
7.	पंख	चमकदार, सीधे शरीर को ढंके हुए।	रूखे, उठे हुए और शुष्क, पंखों का गिरना, खुले घाव के साथ
8.	त्वचा	मृदु, लचीली	रूक्ष और त्वचा पर वृद्धि (नोड्यूल्स), त्वचा के नीचे रक्त स्त्राव के संकेत
9.	गर्दन	सीधी, घुमाने के लिए मुक्त और व्यवस्थित गले के पंख	लकवाग्रस्त, रूक्ष पंखों के साथ मुड़ी हुई, उठाने में सक्षम नहीं अथवा सदैव ऊपर की ओर देखते हुए या सदैव वक्ष क्षेत्र के नीचे रखे।
10.	पंख	शरीर पर ठीक से सेट और एकसार रूप से व्यवस्थित	नीचे लटके हुए, लकवाग्रस्त और असामान्य रूप से व्यवस्थित पंख
11.	पैर	सीधी, चपटी टांगे, पंजे पूरी तरह से फैले हुए, चिकने शल्क	मुड़े हुए सूजे पैर, गोल टांगे/पिंडलियां, निर्बलता, घुटनों पर चलना, पैर सूजे और पंजे मुड़े हुए, एक पैर आगे और दूसरा पीछे, चलने फिरने में असमर्थ।
12.	मलद्वार/वेन्ट	अंडे देने वाली मुर्गियों में अंडाकार। अन्य में बड़ा और आर्द्र।	गोल, छोटा, सूखा, चिपचिपा मलद्वार, कभी-कभी चोंच मारने के कारण क्षतिग्रस्त।

1.2.4 प्रेक्षण

अपने द्वारा परीक्षण किए गए पक्षी में निम्नलिखित भागों की स्थिति को नोट कीजिए।

i) सिर :

ii) आंखें :

iii) कॉम्ब और वाटल :

iv) चोंच :

v) नाक :

vi) मुख :

vii) डैने :

viii) त्वचा :

ix) गर्दन :

x) पैर :

xi) पंख :

xii) मलद्वार/वेन्ट :

1.2.5 परिणाम

आपके द्वारा परीक्षण किया गया पक्षी ..... है (स्वस्थ या रोगी)

1.3 सावधानियां

- कुक्कुट फार्म के अंदर चलते हुए ये ध्यान रखें कि आपके द्वारा पक्षी न कुचले जाएं।
- ब्रीडर (प्रजनक) नरों को पैरों से नहीं बल्कि पंखों से पकड़ना चाहिए जिससे पैरों को चोट न लगे, क्योंकि उससे पैर प्रजनन के लिए बेकार हो जाते हैं।
- पक्षियों का हस्ताचरण मृदुता से और अच्छी तरह करें।
- पक्षियों से डरे नहीं, वो आपको हानि नहीं पहुंचाएगें।
- पक्षियों का हस्ताचरण करने के पश्चात् सदैव अपने हाथों को धोएं।
- कुक्कुट फार्म के मालिक/सुपरवाइजर द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन कीजिए।